Peasant Uprising of Patharughat-1894

The 1894 revolt of Patharughat is one of the most significant event in the history of Indian nationalism. This revolt resulted from peasants' protest against the enhancement of land tax.

By the end of the 19th century, the British Government succeeded in establishing a plantation economy in Assam to a great extent. A tax policy was framed with a dual strategy to increase the public revenue resources as well as to squeeze the peasantry so much that they would be forced to give up their traditional occupation and join the labour market. Between 1826 and 1893, the land revenue rates were enhanced several times, crippling the peasant economy. Thus, socio-economic changes brought about during the colonial rule led to the complete breakdown of the backbone of peasant economy.

The peasants began expressing their anger. During 1893-94, thousands participated in demonstrations and rallies for several days, particularly in Kamrup and Darrang Districts. At the same time, the peasants of Patharughat and neighbouring areas under Sipajhar *tahsil* of Darrang district united under the banner of *Raijmel* (Peoples' assembly) to challenge the enhancement of tax.

The news about holding of regular *mels* at Patharughat invited the attention of JD Anderson, the Deputy Commissioner of Darrang District. To prevent such a meeting, Anderson took District Superintendent of Police JR Berington and his force to Patharughat on 27 January 1894.

The next morning, Anderson sent Berington and his men with the *tahsildar* for attaching the property of a *ryot* who had been served a notice to pay tax. Berington returned in an hour and reported that he was accosted by some aggrieved peasants while doing his job, and that he fired his revolver into the ground to keep them from coming close.

Shortly afterwards, a large number of *ryots* approached the rest-house where Anderson was camping. As they were unarmed, he met them in an open space within the rest-house complex and read out the orders of the government. He also told them holding *mels* was illegal and punishable. But the *ryots* refused to move unless their demands were met. Thereupon, Berington had pushed them to an open field nearby where a huge crowd was waiting. The crowd started hurling sticks, bamboos and clods of earth at the sepoys. Under orders of the DC, Berington and his men fired continuously on the assembled *ryots*.

The official reports said 15 persons died and 37 were wounded, but the actual figures were much higher. As narrated in the *Dolipuran*, a ballad composed on the basis of folk memory to commemorate the Patharughat uprising, "*Sat kuri raij mori thakil dat chelei pori*" (140 peasants died in the revolt).

The peasants of Patharughat were the makers of their own rebellion. They proved that they were conscious of the reality and capable of challenging the government. The age long village harmony of Assam facilitated the rise of a class of peasants that emerged as a potential threat to colonial government. Hence the collective action of the peasants of Assam was as significant as other peasant struggles of colonial India.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp remembering the bravehearts of Patharughat rebellion, honouring their heroic acts that played a key role in India's freedom struggle.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Kanika
Text	:	Referenced from content provided by Rabin Deka, Professor, Department of Sociology, Tezpur University, Assam.

भारतीय डाक
India Post
डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

पथरुघाट का किसान विद्रोह- 1894
Peasant Uprising of Patharughat- 1894

विवरणिका BROCHURE

पथरुघाट का किसान विद्रोह-1894

1894 का पथरुघाट विद्रोह, भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। यह, भूमि कर में वृद्धि के खिलाफ किसानों के द्वारा किया गया विद्रोह था।

19वीं सदी के अंत तक, ब्रिटिश सरकार असम में बागान अर्थव्यवस्था स्थापित करने में काफी हद तक सफल हो चुकी थी। अंग्रेजों द्वारा एक ऐसी कर नीति तैयार की गई, जिसका मकसद यह था कि सार्वजनिक राजस्व अर्जन के स्रोत भी बढ़ें और साथ ही किसानों पर कर का बोझ इतना बढ़ जाए कि वे, अपना पारंपरिक व्यवसाय छोड़कर श्रमिक बाजार में शामिल होने के लिए मजबूर हो जाएं। 1826 से 1893 के बीच, भूमि राजस्व दरों में कई बार वृद्धि से कृषक अर्थव्यवस्था चरमरा गई। इस प्रकार, औपनिवेशिक शासन के दौरान हुए सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने कृषक अर्थव्यवस्था की रीढ़ तोड़ कर रख दी।

किसानों ने अपना रोष व्यक्त करना शुरू किया। 1893–94 के दौरान हजारों किसानों ने कई दिनों तक, विशेषकर कामरूप और दरंग जिलों में, प्रदर्शनों और रैलियों में भाग लिया। उसी समय, दरंग जिले के सिपाझार तहसील के अंतर्गत पथरुघाट और आस–पास के इलाकों के किसानों ने राइजमेल (लोगों की सभा) के बैनर तले एकजुट होकर कर में वृद्धि को चुनौती दी।

पथरुघाट में नियमित सभाओं की खबर ने दरंग जिले के डिप्टी कमिश्नर जे. डी. एंडरसन का ध्यान आकर्षित किया। ऐसी सभाओं को रोकने के लिए एंडरसन, जिला पुलिस अधीक्षक जे. आर. बेरिंगटन और उनके बल के साथ 27 जनवरी 1894 को पथरुघाट पहुंचा।

अगली सुबह, एंडरसन ने बेरिंगटन और उनके सिपाहियों को तहसीलदार के साथ एक रैयत, जिसे कर चुकाने का नोटिस दिया जा चुका था, की संपत्ति कुर्क करने के लिए भेजा। एक ही घंटे में बेरिंगटन ने वापस लौटकर सूचित किया कि जब वह अपने सिपाहियों के साथ वहां पहुंचा, तो कुछ पीड़ित किसानों ने उन्हें घेर लिया, जिसके चलते इन किसानों को रोकने के लिए उन्हें अपनी रिवॉल्वर से जमीन पर गोली चलानी पड़ी।

तत्पश्चात, बड़ी संख्या में किसान एकजुट होकर उस रेस्टहाउस पहुंच गए, जहां एंडरसन ठहरे हुए था। किसान निहत्थे थे। यह देखकर एंडरसन ने रेस्टहाउस के परिसर में उन लोगों से मुलाकात की और उन्हें सरकार का आदेश पढ़ कर सुनाया। उन्होंने किसानों को बताया कि सभाएं आयोजित करना अवैध और दंडनीय है। लेकिन किसानों ने अपनी मांगें पूरी न होने तक पीछे हटने से इनकार कर दिया। इसके बाद, बेरिंगटन ने सिपाहियों की मदद से किसानों के समूह को पास के एक खुले मैदान में खदेड़ दिया। वहां पहले से ही भारी भीड़ मौजूद थी। भीड़ ने सिपाहियों पर लाठी, बांस और मिट्टी के ढेले फेंकना शुरू कर दिया। डिप्टी कमिश्नर के आदेश पर, बेरिंगटन और उसके आदमियों ने वहां एकत्रित रैयतों पर गोलियां बरसा दी।

सरकारी रिपोर्टों के अनुसार इस हादसे में 15 लोग मारे गए और 37 घायल हुए, लेकिन वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक थी। पथरुघाट विद्रोह पर लोक स्मृति के आधार पर रचित कथागीत, द्लिपुराण में वर्णित है, ''सात कुरी राइज मरि थाकिल घत चेलाइ परि'' (विद्रोह में 140 किसान मारे गए।)

पथरुघाट का विद्रोह किसानों का अपना आंदोलन था। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वे वास्तविकता के प्रति सचेत एवं सरकार को चुनौती देने में सक्षम थे। असम के गांवों एवं उनके लोगों के बीच लंबे समय से चली आ रही एकजुटता की भावना ने किसानों के एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया, जो औपनिवेशिक सरकार के लिए संभावित खतरा बनकर उभरा। अतः असम के किसानों का सामूहिक संघर्ष, औपनिवेशिक भारत के अन्य कृषक संघर्षों के समान ही महत्वपूर्ण था।

डाक विभाग, अपने साहसिक कारनामों से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पथरुघाट विद्रोह के जांबाजों के सम्मान में स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री कनिका

पाठ : रबिन डेका, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 302800
Stamps Printed	: 302800
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00